आल्हा

बम्बई का रक्त स्नान

केदारनाथ अग्रवाल

आल्हा

बम्बई का रक्त-स्नान

(बम्बई के नौसैनिकों के जीवन-मरण की कहानी)

केदारनाथ अग्रवाल

साहित्य भंडार
इलाहाबाद 211 003

I S B N : 978-81-7779-195-8

❁

प्रकाशक

साहित्य भंडार

50, चाहचन्द, इलाहाबाद-3

दूरभाष : 2400787, 2402072

❁

लेखक

केदारनाथ अग्रवाल

❁

स्वत्वाधिकारिणी

ज्योति अग्रवाल

❁

संस्करण

साहित्य भंडार का

प्रथम संस्करण : 2009

❁

आवरण एवं पृष्ठ संयोजन

आर० एस० अग्रवाल

❁

अक्षर-संयोजन

प्रयागराज कम्प्यूटर्स

56/13, मोतीलाल नेहरू रोड,

इलाहाबाद-2

❁

मुद्रक

सुलेख मुद्रणालय

148, विवेकानन्द मार्ग,

इलाहाबाद-3

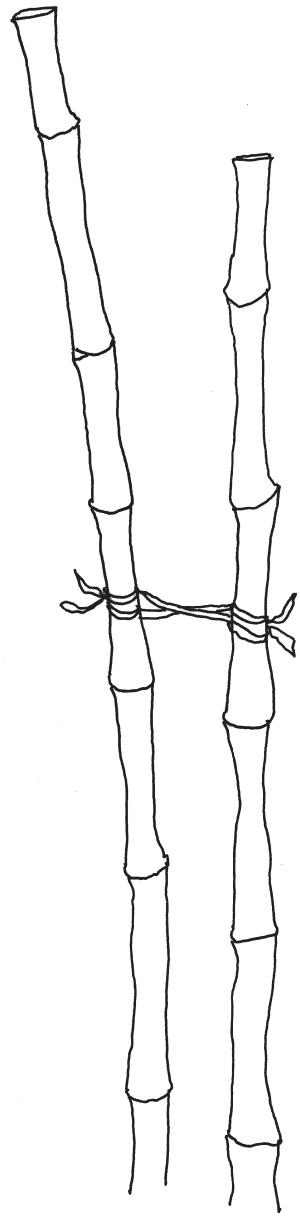

मूल्य : 50.00 रुपये मात्र

आल्हा

बम्बई का रक्त-स्नान

प्रकाशकीय

इस संकलन का प्रकाशन 'साहित्य भंडार' के प्रथम संस्करण के रूप में सम्पन्न हो रहा है। केदारजी के उपन्यास 'पतिया' को छोड़कर, उनके शेष समस्त लेखन को प्रकाशित करने का गौरव भी 'साहित्य भंडार' को प्राप्त है। केदारनाथ अग्रवाल रचनावली (सं० डॉ० अशोक त्रिपाठी) का प्रकाशन भी 'साहित्य भंडार' कर रहा है।

एक तरह से केदार-साहित्य का प्रकाशक होने का जो गौरव 'साहित्य-भंडार' को मिल रहा है उसका श्रेय केदार-साहित्य के संकलन-संपादक डॉ० अशोक त्रिपाठी को जाता है उसके लिए 'साहित्य-भंडार' उनका आभारी है। यह गौरव हमें कभी नहीं मिलता यदि केदार जी के सुपुत्र श्री अशोक कुमार अग्रवाल और पुत्रवधू श्रीमती ज्योति अग्रवाल ने सम्पूर्ण केदार-साहित्य के प्रकाशन का स्वत्वाधिकार हमें नहीं दिया होता। हम उनके कृतज्ञ हैं।

भाई आर. एस. अग्रवाल ने इस संकलन को कलात्मक सज्जा प्रदान किया इसके लिए उनका आभार।

सतीशचन्द्र अग्रवाल
विभोर अग्रवाल
2009

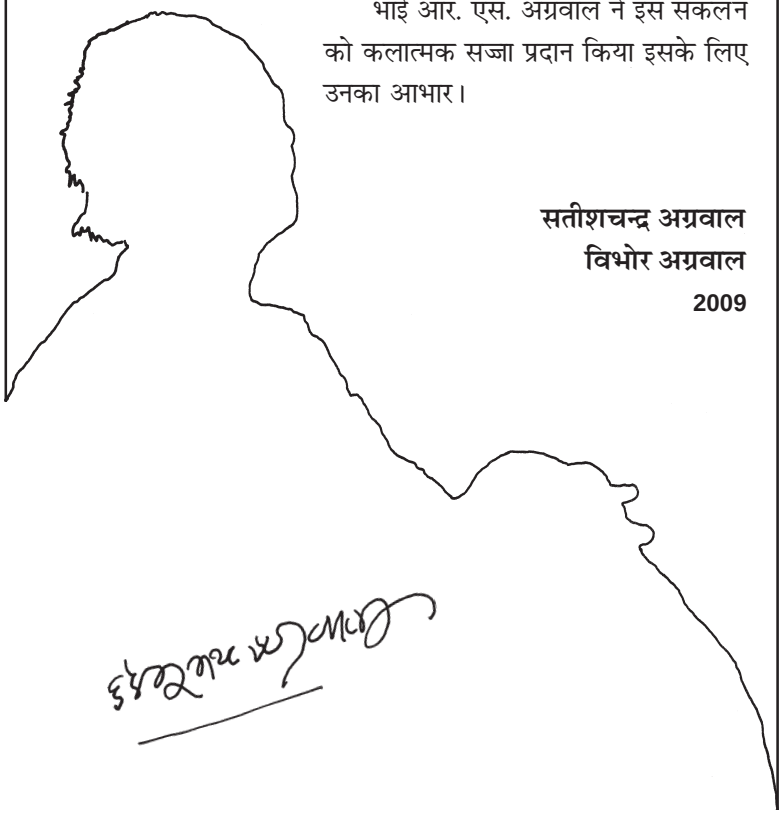

मेरी बात

मुझे, प्रगतिशील कवि एवं चिंतक श्री केदारनाथ अग्रवाल का यह ऐतिहासिक आल्हा—बम्बई का रक्त-स्नान—प्रकाशित करते हुए 'विशेष' हर्ष की अनुभूति हो रही है। 'विशेष' इसलिए कि यह रचना, शैली और तेवर दोनों ही दृष्टियों से उनकी अन्य प्रकाशित रचनाओं से सर्वथा भिन्न, लेकिन उनकी प्रकृति और आत्मा से अभिन्न, बुन्देलखण्ड के सर्वप्रिय जन-काव्य-रूप—आल्हा और बाँदा की जन बोली—बुन्देली में रची गई है। घटना, अँग्रेजों की गुलामी के विरुद्ध, 1946 की इतिहास प्रसिद्ध बम्बई के नौ-सैनिकों की बगावत है।

यह रचना 'हंस' के सन् 1946 के अगस्त के अंक में पहली बार प्रकाशित हुई थी। मैं इसे स्वतंत्र रूप से प्रकाशित करने का, वर्षों से, इच्छुक था, परन्तु रचना की अनुपलब्धि ने उसके प्रकाशन में बराबर व्यवधान बनाये रखा। अन्त में 'जिन खोजा तिन पाइयाँ' की उक्ति चरितार्थ हुई और प्रकाशन से मात्र तीन दिन पूर्व यह रचना प्राप्त हो सकी।

इसी समय, सौभाग्य से, मध्य प्रदेश प्रगतिशील लेखक संघ की भोपाल इकाई ने केदारनाथ अग्रवाल के साहित्य पर विस्तृत रूप से साक्षात्कार और सार्थक बहस का आयोजन किया है। डॉ० अशोक त्रिपाठी ने सुझाव दिया कि इस ऐतिहासिक रचना के प्रकाशन का सबसे अधिक उपयुक्त अवसर यही है। उसी के परिणामस्वरूप यह रचना इस अवसर विशेष पर प्रकाशित कर रहा हूँ। यदि मात्र दो दिनों के अन्दर यह रचना आपके समक्ष प्रस्तुत हो सकी है, तो इसमें श्री बालकृष्ण पाण्डेय और डॉ० अशोक त्रिपाठी के अथक श्रम और सहयोग का ही योगदान है। मैं इनका हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ।

8 सितम्बर, 1981 ई०

— शिवकुमार सहाय

बम्बई का रक्त-स्नान

ना मैं सुमिरौं देबी देउता ना मैं सुमिरौं सिद्ध गनेस।
ना मैं सुमिरौं क्रस्नकन्हैयै ना मैं सुमिरौं बिस्नु महेस॥
देबी देउता सुमिरे सुमिरे हम या दुनिया दीन बिसार।
वा दुनिया माँ हम मन लावा ह्वैगा एहिसे नास हमार॥

दक्खिन माँ बम्बई सहर है साथिव! यहिका सुनो हवाल।
हुआँ धकाधक मिलैं चलति हैं गिन्ती का ना करौ सवाल॥
हुआँ रेल-ट्रामें चलती हैं हुआँ मोटरें फिरैं तमाम।
हुआँ हवा माँ उड़ै सवारी जेहि का उड़नखटोलवा नाम॥
हुआँ न गिनती है सड़कन कै हुआँ न पावै कोऊ छ्वार।
या वा कैती चक्कर काटै चाहै जेत्ता कोऊ यार॥
हुआँ घरन बंगलन कै छबि है जहाँ द्याखौ तहँ आलीसान।
ऐसि बनावट नयी नयी है जेहिका देखे हरै गुमान॥
जगमग जगमग बिजरी चमकै उजियर अँधियरिया माँ होय।
चौकैती से सुन्दर लागै जैसे दूधे माँ गै धोय॥

हुआँ बजारन माँ लाखन का अउर करोरन का रोजगार।
बात बात माँ ह्वात जात है कोऊ पावै पता न पार॥
चाँदी स्वाना का छिन-छिन का उतरा अउर चढ़ी का भाव।
बड़े बड़ेन का करै देवाला छोटेन का का करौं गिनाव॥
भाँति भाँति का कपरा लत्ता भाँति भाँति का माल बिकाय।
ऐसी कवनिउ चीज न होई जौन बेसाहे ना मिलि जाय॥
हुआँ न जाने केत्ते मनई अन्त अन्त ते बसिगे आय।
जैसे चौगिरदा से माखी उड़ि उड़ि छत्ता देयँ लगाय॥
कोऊ थैलीसाह बनो है कोऊ बनो मुनाफाखोर।
कोऊ लछमीपुत्र बनो है कोऊ मिलें चलावैं जोर॥
इनके खाना दाना मँहनी अउर डिनर माँ अन्न चुकायँ।
अण्डा मुरगी माँस मिठाई तेतनिव केतनिव तौ उठि जायँ॥
पियै पियै माँ जाने केत्ती बोतलन केरि शराब बढ़ाय।
प्यालन प्यालन चाय पियै माँ मटकन होटलन माँ पी जायँ॥
इनहीं के खातिर औ सुख का कइव सनेमा बड़े सोहायँ।
परदन माँ परछाहीं नाचैं मोटमरदी का गाना गाय॥
खेल तमाशा घुड़दौड़न का साथिव! कैसे करौं बखान।
ना पैहो बिन देखे कोऊ वहिका कउनिव भाँति प्रमान॥
या ना स्वाचौ वा ना समुझौ हुआँ सबै हैं साहूकार।
हीरा मोतियनवाली लछमी सबही के घर करैं बिहार॥

हुआँ मजुरहन कै बस्ती है हुआँ गरीबौ रहैं जुहाय।
पूँजीपतियन के कोल्हू माँ कम पैसा माँ पेरे जायँ॥
हुआँ चलति है सोसन-चक्की हुआँ ह्वात है अत्याचार।
हुऔं न मालिक ध्यान धरत हैं चाहे जेत्ती करौ पुकार॥

हुऐं पारटी कम्युनिस्टन कै आपन दफदर दिहेसि लगाय।
कामरेड जेहिके सामिल ह्वै सबके दुख माँ होयँ सहाय॥
हिन्दी उर्दू अंगरेजी का 'जनयुग' का छापैं अखबार।
नौकरसाही थैलासाही का जो देय करेजा फार॥
हँसिया अउर हथौड़ावाला झंडा लीन्हे फिरैं जवान।
राजनीति कै अर्थशास्त्र के देसदसा के हैं बिद्वान॥
बढ़े कढ़े हैं बड़े पढ़े हैं जानत हैं कस करैं सुधार।
कहाँ बनाबैं कइसा मोरचा कहाँ उठावैं कउन पुकार॥
हुऐं बड़े बम्बई सहर माँ सागर की छाती माँ आय।
लौटि लराई से अब साथिव! ठाढ़ जहाज बहुत सुसतायँ॥
उनमा पंजाबी बंगाली औ' दक्खिनियौ रहें जवान।
हिन्दू मुस्लिम दुइव जात के एक एक से पूर सुजान॥
इसकूली सिच्छा कोई पावा कोउ कालिज माँ पावा ग्यान।
या कारन से सबके मन का दुरबुद्धी का मिटा निसान॥
ऊँ देखिन्ह की उन्हैं मिलत है अँगरेजन से कम तनखाह।

काम करत हैं बेसिन अच्छा नाहीं कोउ करै परवाह॥
दौरा का भत्ता कम पावैं घर बच्चन का वहौ न द्यायँ।
गारी गुझुवा उल्टा पावैं अफसर करैं न रत्तिव न्याव॥
यहिके कारन ऊँ ज्वानन के मन माँ बेहद पड़ा प्रभाव।
सोचेनि, यह तौ बड़ा बुरा है म्याटैं का रच लेव उपाव॥
आपुस माँ मिलि बात चलायेनि आपुस माँ मिलि किहेनि सलाह।
एकमता ह्वै कै सब मानेन लिखिकै पठवैं वाली राह॥
सारे अनयावन का खर्रा आपुस माँ मिलि किहेनि तयार।
ऊपर के अफसर का लिखि-लिखि पठवें लागैं बारहिंबार॥
बहुत दिना तक यहै चला पै यहि से कुछ ना निकरा सार।
उनके खर्रन का ना कुछ भा उनकै सुनी न कोऊ पुकार।।
यहिसे सबके मन माँ व्यापा असन्तोस का ब्याकुल भाव।
पाक करेजा गा दुक्खन से ह्वैगे मन के भीतर घाव॥

यक दिन ऊँ दुपहरि कै ब्यारा पायेनि जो भोजन माँ भात।
बहिमाँ काँकर निकरे यहिसे किहेनि सिकायत खाय न जात॥
अफसर ब्वाला : हाथ पसारे मँगवैयन का मिलै न भीक।
हम तो अब लग यहै कीन है अउर चलब हम अपनै लीक॥
यहै बात 'तलवार' मैं सुनिकै ज्वानन का बढ़ गयौ विसाद।
ओरहन लिखिके फिरि से पठइन पै ना वहिका मिला सुवाद॥

पी० सी० दत्त के व्याड़ैं का दुख अउर जवानन का अपमान।
ई दुइनौ से ज्वाला जागी औ' जागा स्वावा अभिमान॥

पहिले पहिल अठारह का कुछ ज्वानन आपन छ्वाँड़ा काम।
दुपहर भर माँ 'तलवारे' माँ सब जन छ्वाँड़ा काम तमाम॥
काँग्रेस औ' मुसलिम लीगी नेतन कै ढिग गये जवान।
कहेनि : सुझावौ, राह बतावौ तुमहिन से होई कल्यान॥
पै ना दुइनौ राह बतायेनि ना अफसर ने दीन्हा आस।
सोमवार का सब दिन बीता हड़ताली ना भये उदास॥

मंगल आवा कल से ज्यादा जोरदार भै अब हड़ताल।
जेहिका देखे अफसर काँपे साथिव! वहिका सुनौ हवाल॥
बीस हजारी हड़तालिन ने आपन आपन खैंचो हाथ।
काम चला ना भिंसारे से हवैगा सबका एकुइ साथ॥
फिरि पहुँचे चलिकै मैदानै जहाँ सभा कीन्हेनि ऊँ आप।
पूरी माँग सुनायिनि आपन आपन दुख का किहेनि प्रलाप॥
ऐसे बोले जैसे कोऊ बादर गरजै सावन क्यार।
ऐसे गरजे जेहिका सुनिकै कंसन का क्वापै संसार॥
जनता देखेसि वहिकै मन माँ, जागा दृढ़ आतमबिसवास।

बानी सुनि कै हड़तालिन कै चौगुन ह्वैगा हृदय हुलास॥
जो जो कोऊ दीख सभा का एका देखे भा हैरान।
निहचय है अब आजादी के द्वारे पहुँचा हिन्दुस्तान॥
फिरि तौ वँहि के ऊँ हड़ताली 'किले' कइत सब किहेनि पयान।
जिनका देखे नौकरसाही के सारे अफसर थर्रान॥
नारा लागै लाग दनादन इनकलाब औ' जिन्दाबाद।
जय हिन्दौ सुनि पड़ा दनादन रोके रुका न भारी नाद॥
धरती धमकी पाँव तरै कै हड़तालिन लावा भुईंचाल।
साथिव! उनका बाघ बखानौ जउनि किहेनि ऐसी हड़ताल।।
उनका रंगरवैया लखिकै बदलागा अफसर 'तलवार'।
वहिके ठौर माँ फिरि अँगरेजै अफसर भयो मुकर्रर यार॥
हड़तालिन आवाज उठायो : हिन्दुस्तानी होय तैनात।
अँगरेजन कै तरै मँ रहिकै हमसे बात सही ना जात॥
पुलिस चलायेसि लाठी उनपै जेहिसे गड़बड़ अउर बढ़ान।
घायल ह्वै के च्वांटै खायेसि ऐसिन माँ साहब कप्तान॥
सरकारी ठौरन माँ वाँ ठाँ बन्दुखिहा गे दीन डटाय।
हड़तालिन के मन माँ बाढ़ा जेहिसे अउरिव भाव कुभाव॥
या सब भा पै कोउ न साधा यहै तरा माँ दुपहरि बीत।
हड़तालिन का कोउ न हाँका ना कोउ अफसर किहेसि सुभीत॥
बाद दुपहरी झंडा अफसर आवा उनसे पूँछेसि हाल।

पहिले तौ ऊँ कुछु न बुकरे नहीं सुनायेनि कोउ हवाल॥
पै झंडा अफसर जब उनका दीन्हेसि बहुतेरा बिसवास।
मुँह खोलिन औ' हाल सुनायेनि मन माँ राखेनि एकु न गाँस॥
फेरि बनायेनि एक कुमेटी जौन करै हड़ताली काम।
वहै कुमेटी लिखि कै दीन्हेसि हड़तालिन कै माँग तमाम॥
यहौ कहेसि हड़ताल कुमेटी : झंडा अफसर! सुनौ हमार।
बिन नेता के दसखत के हम बात न मानब एक तुम्हार॥
ऐसी-ऐसी बातें सुनिके झंडा अफसर कीन्ह पयान।
साढ़े चार बजे लग भेजी आपन उत्तर अतिमतिमान॥
साढ़े चार बजा, ना आवा, झंडा अफसर गा सन्नाय।
उल्टा हमला कै तीनौ सौ मल्लाहन का दिहेसि धँधाय॥
'नीलम' 'नासिक' 'कलावती' के 'काकोरी' कै बहुत जवान।
पकरि पकरि कै बैंड़ि लीनिगै ठंढा जेहिसे होय तोफान॥
साथिव! कलकत्तेव माँ अस भा सुनिकै बम्बइयन का हाल।
हुगली' के दुइ सौ ज्वानन ने बोल दयी बाँकी हड़ताल॥

आयी बीस तरीखि बुद्ध के प्यारे साथिव! सुनौ हवाल।
या दिन के कुछ अउर कथै है अफसर आपन चलें कुचाल॥
एक कैत तौ फौज बोलायेनि जेहिंसे सबका देयँ दबाय।
एक कैत वा खाना दीन्हेनि जउन कमेटी दिहेसि बताय॥

ओंघनि टारेनि हथियारन का खाली कै दीन्हेनि 'तलवार'।
या सरकारी मोरचा द्याखौ तीन कैत से भा तैयार॥
ऐत्तेव पै तौ हड़तालिन का रोके रुका न भारी जोर।
'वरसोया' से, 'अँधेरी' से, इर्द गिर्द से उठा मरोर॥
रेलनि माँ चढ़ि-चढ़ि के पहुँचे 'चर्चगेट' माँ उतरे आय।
आपन हिम्मत आपन ताकत आपन एका दिहेनि देखाय॥
हाथ तिरंगा झंडा लीन्हे दुइ हजार के भारी भीर।
चर्चगेट के टेसन बाहेर नारन से नभ किहेनि अधीर॥
किला कइत औ' कैसेलबैरेक और कुलाबा केर जवान।
आयि आयि के सामिल ह्वैगै चौगुन ह्वैगै सबकै सान॥
अखबारन माँ खबर छपी यह कम से कम तौ पाँच हजार।
हड़तालिन का मजमा बटुरौ उमड्यो जैसे सिंधु अपार॥
साही हिन्दुस्तानी बेड़ा के उइँ चौबिस सबै जहाज।
बेमनई के ह्वैगे सूने जैसे पंछी उड़िगे आज॥

हड़तालिन कै बीर कुमेटी ऐसी जो कीन्हेसि ललकार।
जेहिका सुनिकै अफसर चौंके खलबल मचिगा उनमाँ यार॥
कहेसि कुमेटी : 'अफसर ल्वागो! माँग हमार अरज सुन ल्याव।
जेत्ता पहिले माँग चुके हम वहिके आगे अब गुन ल्याव॥
भूखे हन तौ वहिसे का भा हमहू का है देस पियार।

हमरेव मन माँ तो ई बसिगे आई० एन० ए० वाले यार॥
इनके ऊपर चले मुकदमा कैसे हमका आवै चैन।
दुख से कैसे दिन का काटी कैसे बितई सारी रैन॥
इनके केसन का वापुस लेव इनकौ करौ मुकदमा बन्द।
इन्डोनीसिया की हिन्दी सब फौजैं वापुस लेव तुरन्त॥
अउर जो चाहौ हम सुधियायी, आत्मसमरपन करियै आय।
तौ तुम तुरतै फौज हटावौ जेहिसे हमका दिहेव घेराय॥'

हड़तालिन ने यहिके ऊपर अउर देखायौ आज कमाल।
कैसेलबैरेक अउर जहाजी गार्डरूम की बाबत ताल॥
कीन्हेनि : फौजी कोउ न आवै चाहै प्रान भले कै जायँ।
अस अन्याव सहा ना होई फौजिन का हम देब भगाय
नौकरसाही! तैं फिरि सुनि लै गरजि कहत हैं जिउ के बात।
तिनतरफा मोरचा के कारन हम ना कैसेव होब परास्त॥
निन्दा तोरि करित है, सुन तै, तिनतरफा कै चाल खराब।
जब लग जीबै तब लग तोहिका कहते रहब खराब खराब॥
वै साथवि! तुम धन्य बहादुर तुममाँ साहस सक्ति अपार॥
काम न कीन्हेव ऐसा कौनौ मारकूट औ' अनरथ होय।
जेहिके कारन मान महातम हड़तालिन कै जाय न खोय॥

बात कुमेटी कै, सबकै सुन, अफसर ह्वैगै बहुत बेहाल।
पी० सी० दत्त का डिसमिस कीन्हेनि हड़तालिन का कमै मलाल॥
पै हड़तालिन के गुस्सा का ऐसा ऊपर पारा भाग।
अस लागै कि ह्वातौ है कुछु बरतै है अब भारी आग॥
साथिव! तिनतरफा मोरचा का जहर से जादा परौ प्रभाव।
खून जवानन का अस खौला खायेसि जैसे सिंह क ताव॥
बिन सोये सब रात बितायेनि मन मा सबके बहा तोफान।
तरा तरा कै सोहरत ह्वैगै अफसर तुलें हरैं का प्रान॥
ना द्याहैं अब दाना पानी न द्याहैं अब बाहेर जायँ।
रोसभरे सबके चेहरन के दीवा कुछु-कुछु लाग बुतायँ॥
धीरज धारै मूँठी बाँधे वीर जवानन काटी रात।
साहस उनका घटा न तनकौ वेसिन्ह जोर रहा अर्रात॥
दिल्ली माँ सब खबरैं पहुँची ज्वान भये हैं हाथ बेहाथ।
झंडा अफसर उड़िकै आवा औरेव आयें वहिके साथ॥
तुरतै एक कुमेटी बनिगै अफसर कीन्हेनि तहकीकात।
ज्वानन के इजहार लिखेंगे, फेरि सुनायेनि आपन बात॥
जो जो काल शहर माँ भा है जो-जो भा है अत्याचार।
झूठ बात है की हड़ताली ऊँ सबके हैं जिम्मेदार॥
हड़तालिन का दोख न कुछु है हड़तालिन ना कीन्हेनि मार।
ऊँ तो संजम साथ रहे हैं संजम के हैं सब अवतार॥

साथिव! हड़तालिन का संजम राखेव अपने मन माँ याद।

काम परे माँ वहिका बरतेव ह्वै हौ तुम वहिसै आजाद॥
जो संजम का साथ न लेई जो संजम का देई दुराय।
साथिव! वहिकै हार अटल है चाहे देउतौ होय सहाय॥
बार बिरसपत यकइसि आयी आरम्भ ह्वैगा झंजावात।
जोर जुलुम सरकारी नाचा सुने करेजा फाटा जात॥
साढ़े आठ बजा जब दिन का खायँ पियैं का उठा सवाल।
ज्वानन सोचेनि ह्याँ ना कुछु है बाहेर से लावौ तत्काल॥
यहिके खातिर कैसेलबैरेक से जो कइयौ चले जवान।
तौ सन्तरी मरहठा औचक बन्दुखियँ निज लीन्हेसि तान॥
ऐसा मारेसि जैसे कोऊ मारै आपन शत्रु बेलाज।
भाई भाइन का अब मारै यहै गुलामी सिखवै आज॥
ऊँ चौंके फिर पाछे पछिले लै लीन्हेनि हाथेन हथियार।
अउर मरहठा से ऊँ बोले 'ऐसा करो न अत्याचार॥
हम तुम दुइनौ हिन्दुस्तानी, एकै रकत हमार तुम्हार।
एकै देस का दिल धड़कत है जेहि माँ भारत करे पुकार॥
हमका मारे तुम मरि जैहौ हम तुम एकै माटी आन।
ना मारौ तुम हमका गोली, ऐसिनि मिटिगा हिन्दुस्तान॥'

बानी सुनकै ऊँ ज्वानन के वहौ मरहठा गा फिरि मान।
साथिव! तुमहू औसर आये भाइन का ना लीन्हेव प्रान॥
करो प्रतिग्या साथिव! तुमहू, महतारिन के कसमैं खाव।
अपने हिन्दुस्तानिन का तुम मारैं का ना करौ हियाव॥
भाइन का जो गोली मारै वहिका मिले नरक का वास।
निहचय जानो दगावार वा, वहि कै होई सत्यानास॥
हाँ तौ साथिव! पहिल पहर का भिंसारे का सुनौ हवाल।
हड़तालिन का खायँ पियैं का अफसरवा ना दीन्हेसि माल॥
भूखे अउर पियासे पेटन हड़तालिन का धीरज छूट।
'कैसेलबैरेक' 'तलवारे' का सब भंडारा लीन्हेनि लूट॥
चौकैती से खलबल मचिगा अफसर ह्वैगे बहुत नराज।
अउर जवानन पै अस तड़पै जैसे तड़पे नभ मा गाज॥
मारकूट तौ आरम्भ ह्वैगै च्वाँट कई ज्वानन के लाग।
ऊँहौ चलायेनि पाथर वाथर फौजी तकवैयन के लाग॥
नौकरसाही का बस तौ फिरि मौका मिलिगा मारैं क्यार।
पेट खलाये हड़तालिन का खूब दनादन भूँजै क्यार॥
आधे घंटा लौं बरसायेनि अँगरेजन गोली बौछार।
तौ हड़तालिव रच्छा खातिर अस्त्र सस्त्र सब लीन्हेनि धार॥
अउर चलायेनि उनहू गोली निधड़क ह्वैकै बारहिंबार।
देख बहदुरी हड़तालिन कै सहमी जुलुमा कै सरकार॥

नयी बुलायेसि फौज मदद का कैंसेलबैरेक माँ ततकाल।
कइव तरा के अस्त्र सस्त्र का भारी जोखिम विछिगा जाल॥
साथिव! तब 'नरबदा' बहादुर किहेसि इसारे से ऐलान।
जैसे बने माँ नाहर गरजै भय से काँपै सब सुनसान॥
जौ फौजी गोली बरसैहैं हड़तालिन का भुजिहैं आज।
तौ हमहू सब आगी उगिलब एकै ह्वैकै सबैं जहाज॥
बीर जहाजी! तुमहूँ सुनि लेव औ' तुमहूँ ह्वै जाव तयार।
गोली बन्दूखन माँ डारौ, चले जो तट से होवै वार॥
अंगरेजी सरकारी अफसर! तुमहूँ सुनि लेव बात बयान।
छाँड़ि जहाजन तुरतैं खसिकौ तट का तुरतै करौ पयान॥
हिन्दुस्तानी अफसर! तुमहूँ ह्वै जावौ अब हमरे साथ।
नौकरसाही से लड़िबे माँ तुमहूँ आज बटावौ हाथ॥

झंडा अफसर क्यार हुकुम भा अफसर छोड़े सबै जहाज।
धन्य 'नरबदा'! तोर बहदुरी! तोहिंका पूजै हिन्द समाज॥
फिरि नौसेना अंगरेजन कै झंडा अफसर लिहेसि बुलाय।
कैसेलबैरेक टउनहाल औ फटकन के ढिग दिहेसि डटाय॥
बारा बजा कि आफत ह्वैंगै दुइनौ कइत से ह्वैंगा वार।
हिन्दुस्तानी ज्वानन मारा दस्ती ग्वाला बारहिंवार॥
औ अंगरेजी फौज चलायेसि धायँ धायँ कै आपन तोप।

जेहि का सुन के धरती काँपी औ काँपा आकास क लोक॥
तीस मिनट लग आगी बरसी तीस मिनट लग जोर देखान।
फिरि तौ कुछु कुछु मद्धिम परिगा आँधी औ आगी का गान॥
'अवध', 'सिन्ध', 'पंजाब', जहाजौ साथिव! दीन्हेनि सबका साथ।
उनकै करनी कोउ न बिसरी उनके सौंहै नावो माथ॥
फेरि बजा जब दुइ दुपहर का तब तौ ह्वैगा बहुतै जोर।
ऐसि न दीख लराई कोऊ जैसी भै अबकी घनघोर॥
हवा मँ जम कै स्याना दौरी अब ना बचिहै कोऊ आज।
पटरा ह्वै हैं, चौपट ह्वै हैं, जेत्ते हैं सब ज्वान, जहाज॥
झण्डौ अफसर धौंसि सुनायेसि आपन दुइनौ भौंहैं तान।
सारी फौजें तौपैं दगिहैं हड़तालिन का रही न नाम॥
साथिव! ओंघन जनता दौरी तोपन का सुनि सुनि कै सोर।
देख बहदुरी ऊँ ज्वानन कै वहिमाँ जागा जोर अथोर॥
खाना लैके पानी लैके फल का लैके पहुँच जाय।
भूखेन कै वा भूख मिटायेसि प्यासेन का वा दिहेसि पियाय॥
साथिव! वा जनता का सुमरौ, हाथ जोरि कै करौ प्रनाम।
ऐसिनि जनता का है साथिव! पूरे भारत भर माँ काम॥
साथ देय जो हर मोरचा माँ हर मोरचा माँ रहे जुहान।
नौकरसाही से ना पछिलैं जनता वहै बड़ी गुनवान॥

साढ़े चार बजा तब साथिव! दुइसौ चालिस मिनट बितान।
तौ फिरि जाय करारा मोरचा कैसेलबैरेक क्यार थिरान॥
वीर कुमेटी हड़तालिन के गरजि सुनायेसि बीर पुकार।
'हम ना बात सुलह के चालब जौ ना टरिहै फौज गँवार॥'
साँझ भरे माँ अनगिन जनता तजिकैं आपन सब रोजगार।
जुरी अपोलो बन्दर मँहनी मूँड़न का ना वारापार॥
ठाढ़े निरखै ऊँ ज्वानन का जिनका कउनौ नहीं कसूर।
जिनका मटियामेट करैं का अफसरसाही किहेसि गरूर॥
रोम रोम मुरछा से च्याता रोम रोम माँ आगी लाग।
अब जनता ऐसे फुफकारे जैसे फुफकै करिया नाग॥
धरती पाँव तरे कै कोपी क्वापा धीरजवन्त अकास।
सीतल बयरा आगी ह्वैगै धधकैं लाग सहर कैं साँस॥
गुनीं कुमेटी हड़तालिन के ऐसिन माँ तब किहेसि अपील।
'तीनिव दल के न्याता ल्वागौ होय न मिनटन के अब ढील॥
झण्डा अफसर धमकावत है हमका जर से डारी मेंट।
नौकरसाही बलिबेदी माँ लेई हमरे जिउ कैं भेंट॥
पंचौ! तीनौ झण्डा लैकै तीनों ह्वैंके एकै संग।
नौकरसाही अफसरसाही दुइनौ का मद कीजै भंग॥
हमरी पीरा से व्याकुल ह्वै हमरे दुख से ह्वैंके अन्ध।
जनता का संग साथ समेटे हड़तालन का करौ प्रबन्ध॥

काँगरेस के चुप्पी साधेनि मुसलिम लीगी रहे बिलान।
ऊँ दुइनौ ना किहेनि सुनायी कम्युनिस्टन ने दीन्हा ध्यान॥
साँजैं साँझ बैन माँ चढ़िकै चौगिर्दा कहि देहिनि सुनाय।
काल सुक्र हड़ताल मनावौ बैरी जेहिसे छक्का खाय॥
विद्यारथियौ यह तय कीन्हेनि उनकर संघ कहेसि नर्राय।
काल सुक्र हड़ताल मनैबै काल न कोऊ पढ़ै का जाय॥
बड़ी रात गै तब पटेल ने अखबारन मा दीन्ह बयान।
जौन न कौऊ वा दिन जाना, दुसरे दिन भा जेहिकर ग्यान॥
लिखेनि पटेल-पढ़ेसि सब जनता होय न सुक्कर का हड़ताल।
कांगरेस की अग्या मानौ चाहै जैसा होय हवाल॥
यकइसिवाली यहै रात का जब बन्दर से मुरकी भीर।
वहिसे अउर पुलिस से ह्वैगै बेहद तनातनी गम्भीर॥
दुई दारी तब पुलिस दगायेसि बन्दूखन से अपने फैर।
ना जाने धौं कौन समय का चुकइसि आपन पाछिल बैर॥
साथिव! केतु-कमांडिंग अफसर नौकरसाही क्यार गुलाम।
वहिका नीक भला कब लागी हड़तालिन का उत्तिम काम॥
साथिव! वा तौ हड़तालिन कै ऐसि वीरतै कहेसि फसाद।
गदर अउर बलवा सम्बोधेसि देस क मान किन्हेसि बरबाद॥
साथिव! यह तुम जिउ माँ जानौ लेव गाँठि साफी माँ बाँध।
हम तुम सब हिन्दुस्तानिन का पर अधीनतै है अपराध॥

पर अधीन हैं जब लग हम तुम सब लग सब है सत्यानास।
उत्तिम से उत्तिम करनी सब बेगुन है मिथ्या बकवास॥
साथिव! आज कनैती कै कै या अपमानै देव भुलाय।
हड़तालिन का तुम तो भ्याँटौ आपन कोटिन बाँह बढ़ाय॥
तुम तौ उनकै करनी गावौ तुम तौ उनका करौ बखान।
उनकै जै जै कार सुनावौ गूँजै पूरा हिन्दुस्तान॥

बाइसि का दिन इतिहासी है बाइसि कै है महिमा खास।
बाइसि का बम्बई सहर का ह्वैगा औरै बेस विलास॥
फाटक खुले मिलन के साथिव! पै ना उनमाँ घुसे मजूर।
मिलै मरी जस परी रहीं थिर ना घूम्यौ पहिया मगरूर॥
वर्कसाप रेलवइव न जागी तीनौं रहीं मरी मुरदान।
सगले छोटि बड़ी फैक्टरियौ छाँड़े ठाढ़ रहीं जिउ प्रान॥
साठ मिलन के तीस लाख के मजदुरहन कै भै हड़ताल।
जेका देखे हिम्मत हारी नौकरसाही भै बेहाल॥
जत्था के जत्था मजदुरवा सड़कन सड़कन फिरैं अधीर।
अर्रहटा के नारा मारेनि भुइँ का अउर हवा का चीर॥
जहाँ जहाँ गे सान्त रहे सब अनुसासन का त्याग न कीन।
लूट मार औ आग लगावै माँ ना कोऊ चित का दीन॥
पै जब मारेगे पुलिसन से बेकारन औ बिन अपराध।

तौ फिर करा बदला लीन्हेनि अउर मिटायेनि मन कै साध॥
फौजी आये तो बेसमझे-बूझे कीन्हेनि गोली बार।
अस लागै जस जुलुमी का है अत्याचारी राज पसार॥
किला छेत्र माँ फौजी लारी दुई मजदूरन दिहेसि दबाय॥
घायल ह्वैगे दुइठा साथी मजदुरवन का आवा ताव।
आयीं जो दुई फौजी लारी उनमा आगी दिहेनि लगाय॥
तौ फिर जालिम ब्रिटिश फौज का मौका माँगा लीन बुलाय।
जौ रैफल औ' टामीगन से सगले गोली दिहेसि बिछाय॥
दुई घंटा माँ परलय ह्वैगै धाँय धाँय का छायो सोर।
कइव मरे और चोटिहल ह्वैगै ऐसि अनैसी भै घनघोर॥

बाद-सकारे लालबाग माँ घुसि घुसि मारेसि पुलिस मजूर।
कै दीन्हेसि केतनव के तन का ठोंकि पीटि कै चकनाचूर॥
'तेजूकाया' माँ दाखिल ह्वै कीन्हेसि गोली कै बौछार।
सौ के आधे जन घायल भे साथिव! मचिगा हाहाकार॥
लाल फरहरावाले आये जिनकै सेवा का है सोर।
असपताल लैगे जखमिन का राखेनि कउनिव कसर न कोर॥
थोरेनि माँ फिरि लारी आयी अस्त्र सस्त्र से लैस तयार।
बेअन्दाजा गोली मारेनि ब्रिटिश सिपाही बारहिं बार॥

एकौ गली बची न उनसे जेहिमाँ आपन धरेनि न पाँव।
जेका पायेनि ओका मारेनि लीन्हेनि काल-कलेवा दाँव॥
तीन बजा तौ लारी दौरीं पागल ह्वैके बीच परेल।
राह चलै माँ खतरा हवैगा मचिगा भारी ठेलमठेल॥

साथिव! चार बजा तो ऐसी घटना घटी न बिसरी जाय।
कुसुम रनदिवे घायल ह्वैगै हत्यारेन कै गोली खाय॥
डोंडे कमल के तन का भेदेसि प्रान पियासी गोली आय।
जान निकरिगै बीर नारि कै खून कै धरती लाल देखाय॥
साथिव! वोका सीस नवावौ पहिरावौ आँसुन का हार।
होयँ जौ ऐसी घर-घर नारी तौ भारत का होय सुधार॥
एक गदेल बहिन के साथे दूध लेयँ का चला दुकान।
दूध के बदले गोली पायेनि दुइनौ फूल तुरत मुरझान॥
एक जने दादर टेसन माँ मौत के मारे उतरे आय।
बाप पूत गोली से मरिगै बिधवा रोयी ह्वै असहाय॥
सड़क डि-लिसली माँ पै साथिव! कामगरन ने मोरचा लीन।
सौ पुलिसन के सौंहे डटिके लरे लराई घंटा तीन॥
कामगरन कै नाकाबन्दी देख वीरतै पुलिस लजान।
दुइ दारी तौ पाछे पछली चोरी छीपा कहूँ लुकान॥
अन्त समय माँ फौजी लारी आय के गोली दिहेसि बिछाय।

पै ना बाँके बीर मजुरवा तनकौ यासे गे घबराय॥
तड़ तड़ तड़ तड़ चौकैती से पाथर के कीन्हेसि बौछार।
तोप अउर बन्दूख न ठहरीं मुँह कै खायेनि करीं हार॥
लरिकौ आपन धरम निबाहेनि कीन्हेनि एकु बड़ी हड़ताल।
नौकरसाही की लाठिन से बाहू मारेगे ततकाल॥
साथिव! या तौ तुम्हैं सुनायेवँ मजदूरन का बीर बखान।
लड़कन का और कम्युनिस्टन का जुग जुग का सन्देस महान॥
अब साथिव! तुम अउर जनेन का सेस सकल जनता का हाल।
लूट मार का, मार कूट का, तहस नहस का सुनौ हवाल॥
ऐसी खबर सहर माँ फैली की आवा है एकु जहाज।
बीर जहाजी ना अब बचिहैं वोसे मारे जैहैं आज॥
गैर मजुरिहा जनता सुनिकै आग भभूका ह्वैगै लाल।
जियै मरै का कुछू ना सोचेसि हानिलाभ का किहेसि न ख्याल॥
हमला कीन्हेनि गैरमजुरिहा ट्राम बसन का दिहेनि बिगार।
मिटरौ सनेमा माँ चढ़ि धाये मोटरमरदी का दिहेनि उतार॥
दुइदा पुलिस चलायेसि गोली अउर दिहेसि जनतै हुसकाय।
ठौर ठौर माँ उपद्दरौ भा जैसा कहूँ न दीख सुनाय॥
गैरमजुरिहा किला छेत्र माँ नौ लारिन का दिहेनि जराय॥
कलबा देबी और भूलेश्वर अउर जहाँ गिरगाँव पसार।

सहर पुलिस बन्दूखै घालेसि भिंसारे से कइऔ दार॥
जादा मनई चोटिहल ह्वैगै असपताल गे दीन पठाय।
मुम्बा देबी का डकखाना भीर माँ कोऊ दिहेनि जराय॥
गहना गल्ला और कपरा कै चालिस तीस दुकान लुटान।
कुछू न उनमाँ बाकी रहिगा जनता लै लै किहेसि पयान॥
मेहता रोड पै फौजी लारी कइऔ दीन्हीं गयीं जराय।
कइव दुकानैं तोड़ ताड़ कै जनता माल लिहेसि अपनाय॥
ट्रामन के दुइ नकरीवाले छाया घर माँ आग छुआय।
तन का धुआँ हृदय की लपटें जनता दीन्हेसि आज देखाय॥
भेंड़ी बजार के डाक घरे माँ साथिव! फैली अगिन महान।
भूख की लूट मा स्वाहा ह्वैगे गल्लावालिव कइव दुकान॥
बंकन माँ फिरि धावा ह्वैगा उनकर दफदर लूटेसि जाय।
कागज पत्तर फारि बहायेसि अउर जलायेसि धन हथियाय॥
डेरुवावै धमकावै खातिर साथिव! बन्दरगाह के पास।
साही ओनइस उड़नखटोलवा दिनभर उड़ि उड़ि लीन्हेनि सौंस॥
पुलिस कमिस्नर जारी कीन्हेसि रोक थाम आरडर फरमान।
बहु घायल बम्बई सहर माँ जेहिसे बाढ़ै नहीं तोफान॥
नौ सैनिक का अगुआ नेता श्री पटेल से दिन भर आज।
बात बहुत बहुतेरा कीन्हेसि सिद्ध होय जेहिसे सब काज॥
पाँच बजे संझा के ब्यारा लै सन्देस सुनायेसि आय।

कहा पटेल कि करौ समापन हम तौ तुमका देब बचाय॥
हमरे मारे कोउ न सतायी तुम्हरी माँगै देब पुराय।
काँगरेस की अग्या मानौ जेहिसे सब बिगरी बनि जाय॥
खान पढ़ा जब ऐसी बानी हड़ताली बोले चिल्लाय।
लड़बै तौ ना अब हम कोऊ पै हड़ताल न देब मिटाय॥
एक पारटी कै ना मानब मुसलिम लीगौ होय सहाय।
वहौ हमैं विसवास देवावै आपन पूरी सक्ति लगाय॥
भारत भर के हड़तालिन का हमका पहिले मत मिलि जाय।
सबकै इच्छा होय जौ ऐसी तौ हड़ताल खतम ह्वै जाय॥
यहिके पहिले खतम न होई हम तो हन तब लग लाचार।
हमरे कारन मरे सैकरन तर तर बही रकत कै धार॥
हम कैसे हड़ताल मिटायी उनका कैसे देई बिसार।
फेरि रात का तलवारे माँ प्रतिनिधि कीन्हेनि बात विचार॥
जिन्नौ कै हमदरदी का जब भोर भये मिलिगा इजहार।
तब हड़तालिन एकमता ह्वै सौंपे का ह्वैगे तैयार॥
अउर कमेटी हड़तालिन कै पास किहेसि ऐसा प्रस्ताव।
धन्य सहरवालेव है तुमका! धन्य तुम्हारे बीर हियाव॥
धन्य मजूरौ! दन्य पढ़ैऔ! धन्य कामरेडौ गुनवान।
हमरे दुख माँ सामिल ह्वै के हमका हिम्मत कियौ प्रदान॥
स्रद्धांजलि उनका देइति है जौन मिटै हमरे हित काज।

माथा नाइति है हम उनका घायल ह्वैगे जौन बेकाज॥

बाइसि बीती तेइसि आयी आत्मसमरपन किहेनि जवान।
सबै जहाज माँ करिया झंडा आत्मसमरपन का फहरान॥
बाढ़ी नदिया मन कै उतरी थिर ह्वैगा ज्वानन का जोर।
मौन गहेसि औ गूँगा हवैगा बाज दमामा जो घनघोर॥
करिया नाग बढ़े जो फुँफके नौकरसाही जिन्हें डेरान।
मार कुण्डली चुप ह्वै सोये तजि के अपने मन का मान॥
बीर बेस का बाना पहिरे धधकत लीन्हें आग अंगार।
नौकरसाही के म्याटैं का आज न दमक्यौ सुभट सकार॥
रणचंडी बयरा कै लोपी तिनुका टरा न ड्वाला पात।
भौंहैं सीध किहेनि सिव तिरछी रुकिगा घातक झंझावात॥
ऐसिन माँ सब फौजी अफसर ठौर ठौर माँ डटिगे धाय।
अस्त्र सस्त्र सब हड़तालिन के कब्जा से लीन्हेनि हथियाय॥
तोपचियन का तुरत हटायेनि आपन प्रभुता दिहेनि जमाय।
नौकरसाही आपन रच्छा पूरम्पार किहेसि मनलाय॥
कैसेलबैरेक तलवारे माँ जहाँ जहाजी जौन ठेकान।
लाग गा सबमाँ फौजी पहरा अफसर साही अति हरखान॥
जनता सुनि कै बहुत दुखित भै वोका तनिकौ नीक न लाग।
लाख किहेसि, हिरदय समुझायेसि बुती न बुतये मन कै आग॥

दुखी मजुरवा काम न कीन्हेनि मिल फैक्टरिऔ रहीं जुड़ान।
आजौ फिरा न एकौ पहिया रहा जहाँ का तहाँ थिरान॥
खुलीं दुकानैं ना सौदा की सबके बन्दैं रहे केंवार।
लूटपाट के डर के मारे सूनी सिसकत रहीं बजार॥
जैसे जैसे दिन बाढ़त गा वैसे वैसे कोप बढ़ान।
जनता और पुलिस फौजन का कर्रा मोरचा अति अधिकान॥
मदनपुरा, भेंड़ी बजार माँ, नार्थब्रूक, गार्डेस की ओर।
डंकन सड़क माँ, फौजी बर्बर किहेनि कसाईपन अति जोर॥
मनदपुरा औं कमतीपुर के बीच सड़क डंकन के पास।
जहाँ अबादी छोट भैयन कै हिन्दू मुसिलिम करैं निवास॥
जनता डटिकै मोरचा लीन्हेसि किहिसि जवाबी हमलावार।
एकु साथ सब हाथ उठायेनि पुलिस जुलम का दिहेनि बिदार॥
फौज पुलिस के मददु क आयी गोलिन गोली दिहेसि बिछाय।
जनता चतुर न हिम्मत हारेसि कइव अड़ंगा दिहेसि लगाय॥
बाँस के बाँधे बड़े अड़ंगा ऐसा काम सुधारेनि आज।
फौजी लारी बढ़ै न पायीं हँकवैंयन का लागै लाज॥
मुसलिम लीगी, काँगरेस का, हँसिया अउर हथौड़ा क्यार।
तीनौ झन्डा साथै फहरें नौकरसाही मानेसि हार॥
अपनै भाई-बंद पुलिस कै जोर जुलुम कै बरनी हेर।
नकरीवाली उनकै चौकी जनतावाले लीन्हेनि घेर॥

नास करैं लागे चौकी का बाकी रहै न एकु निसान।
दगादार के यहै सजा है भारत का होई कल्यान॥
फौजी लारिन कै दुरगति भै उनकै कौनिव चली न चाल।
हुसियारी से साँठ गाँठ से जनतावाले किहेनि बेहाल॥
गली गली के छ्वार छ्वार माँ ऐति कैति चौंकैती यार।
जनतावाले डटिके ह्वैगे मोरचा के खातिर तैयार॥
लारी देखतै कूकै सीटी जनता सुनतै तुरत भगान।
कोउ कहूँ और कोऊ घरे माँ एंघन ओंघन कोऊ लुकान॥
भारी भारी देख अड़ंगा लारीवाले भये उतान।
मारे कोप के व्याकुल ह्वैकै मारैं गोली बिना सिधान॥
पाथर ज्वाब में उनके बरसें चौकेती से गिन्ना खाय।
बहुतै ह्यारैं फौजीवाले पै ना कोऊ उन्हैं देखाय॥
नाखुस ह्वैकै फेरि चलावै धुँआधार गोली बौछार।
अउर अन्त माँ कुढ़िकै मन माँ ओंठि से अन्तै टरैं सिधार॥
ओंठि से जैसिन फौजी खसकें वैसिन जनता प्रगटै आय।
घायल और जखमिन का बीनै लावैं घर माँ होय सहाय॥
दुपहर का बारा जब ब्वाला दुइ फौजी लारी दन्नाय।
धायँ धायँ कै बाहेर मारेनि हत्यारी गोली सन्नाय॥
पाँचुइ मिनट के भितरैं साथिव! द्याखौ जनता क्यार उपाय।
बड़ी बड़ी स्वाडा की बोतलैं मारेसि खैंचि कै दिहेसि बिछाय।

जब फौजी बन्दूखै घालेनि पै ना दुस्मन कहूँ देखान।
लुकाछिपी का मोरचा साथिव! कै डारेसि उनका हैरान॥
तब लारिन से उतरि उतरिकै पकरि पकरिकै पूँछैं लाग।
को मारा है? कौन कैत से? कौन कैंत गा तुरतैं भाग॥
साथिव! जनता दिहेसि भुलावा फौजिन का दीन्हेसि भटकाय।
झूठमूठ वा किहेसि इसारा या वा कैंती घरन देखाय॥
एक घरे माँ फौजी घुसिगे भरा रिवल्वर का मुठियाय।
बीस जने कै पकर धकर भै, दीन्हेनि बीसौ जेहल पठाय।।
साथिव! आजौ फिरि से वस भा जस भा सुक्कर कै दिन नास।
कोहनूर टेक्सटायल मिल माँ आगी लाग, बड़ा भा ह्रास॥
बी० बी० अउर सि० आई० की दुइ ट्रेनैं दीन्हीं गयीं जराय।
आवाजाही माँ अड़चन भै नौकरसाही गै बिलखाय॥
तीन लाख सब कामकरैया आजौ बैठे रहे थिरान।
कोऊ न याकौ तिनुका टारा कोऊ न दीन्हा काम क ध्यान॥
पूर तीन सौ मनई मरिगै तेरह सौ चोटिहल भै भाय।
लगभग सात सौ गोली खायेनि असपताल माँ तलफे जाय॥
रकतै रकत बहा चौकैती रकतै रकत उलीचेसि काल।
रकतै माँ बम्बई नहायेसि रकतै रकत रँगेसि भुईं लाल॥

साथिव! जब आजादी लीन्हेव गाँव मँ तुम्हरे होय सोराज।

तौ निहचय बम्बइयै जायेव ऐसी करौ प्रतिग्या आज॥
हुआँ रकत के छींटा देखेव हुआँ रकत के देखेव धार।
हुआँ ठाढ़ ह्वैकै सड़कन माँ बिसरी लीन्हेव फेरि बिचार॥
माथा नायेव, आँसु बहायेव, सुमिरेव सबका बीर बखान।
नौसैनिक कै औ जनता कै करनी का कीन्हेंव अभिमान॥
यादगार माँ उनके साथिव! एकु इमारत किहेव तयार।
जौन अमर राखै कीरति का जेहिका द्याखै सबु संसार॥
वहि कै ऊपर तीनिव झण्डा खून में भीज दिहेव फहराय।
तीनिव दल के अनुयायिन का एकुइ तीरथ दिहेव बनाय॥
अन्त मँ साथिव! एकु कंठ से चालिस कोटि करौ गुन्जार।
जै नौसैनिक! जै जनता जै! जै जै भारतभूमि हमार॥

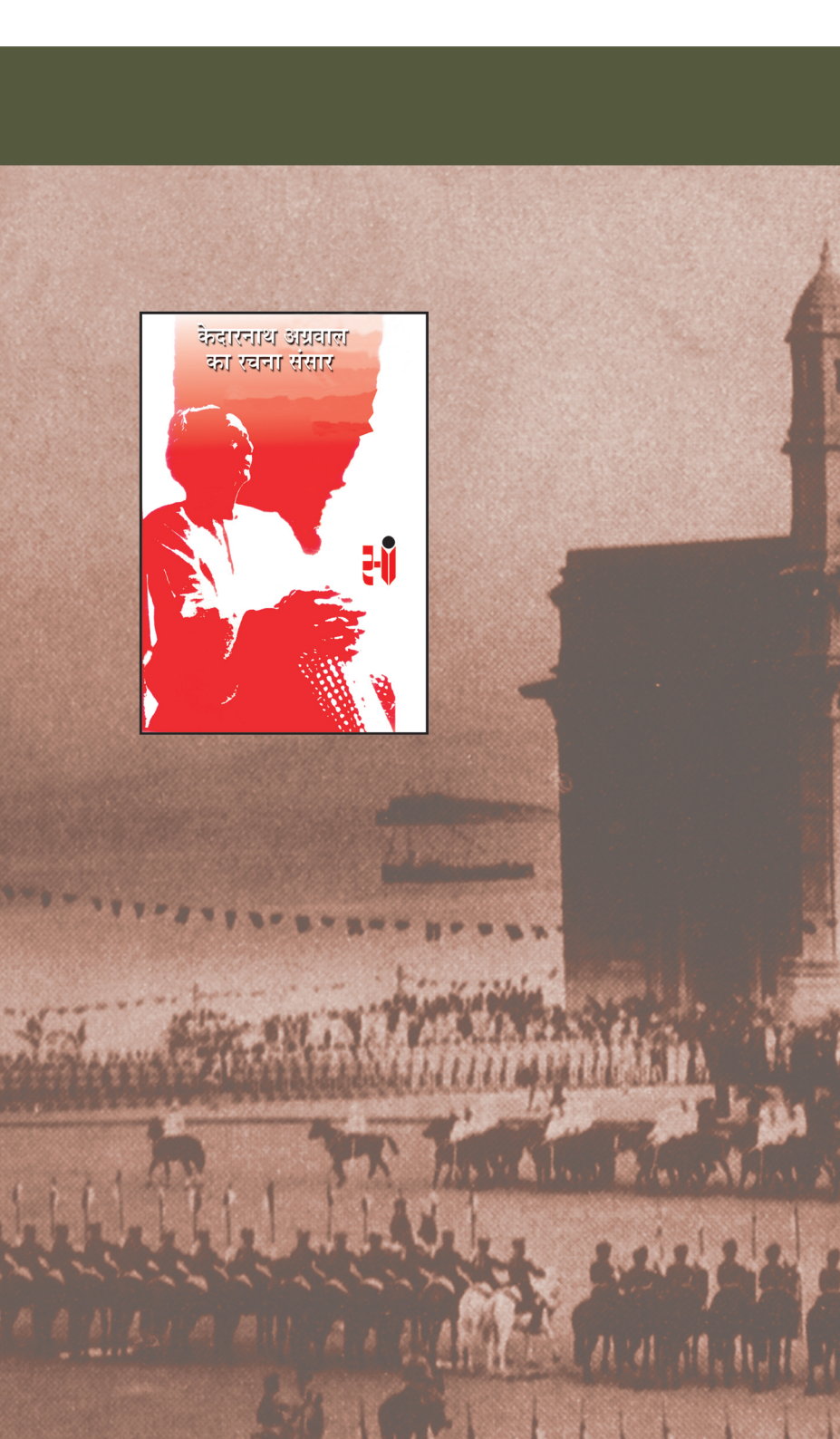
केदारनाथ अग्रवाल
का रचना संसार